मुनि पद्मकीर्ति

जीवन-परिचय : मुनि पद्मकीर्ति सेनसंघ के विद्वान थे। सेनसंघ अत्यन्त प्रतिभाशाली और नियमों का धारक श्रेष्ठ संघ था।

पद्मकीर्ति के गुरु जिनसेन, दादागुरु माधवसेन और परदादागुरु चन्द्रसेन थे।

मुनि पद्मकीर्ति जी द्वारा रचित ग्रन्थ पासणाहचरिउ की समाप्ति शक संवत् 999 कार्तिक मास की अमावस्या को हुई है, अतः इनका समय 10वीं शती माना जा सकता है।

रचना-परिचय : मुनि पद्मकीर्ति द्वारा रचित ग्रन्थ एक ही उपलब्ध है — 'पासणाहचरिउ'।

1. पासणाहचरिउ : यह ग्रन्थ 18 सन्धियों में विभक्त है। जिनमें 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जीवन-परिचय अंकित किया गया है। कथानक आचार्य गुणभद्र के उत्तरपुराण के अनुसार है। यह ग्रन्थ जैनसिद्धान्त और काव्य दोनों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।